आपातकाल में सृजन फुलवारी

रेनु खर्द

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रेनु दीपक खर्द

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-161-9
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, रेनु दीपक खर्द
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY RENU DEEPAK KHURD
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	तृप्त प्यास	6
2.	मजबूरी	7
3.	गुलजार होते घर	8
4.	प्रज्वल निशा	9
5.	मैं वही, मेरी सोच नई	10
6.	तेरा मेरा साथ रहे	11
7.	इक घर बनाया	12
8.	अपना शुभ संवत्सर हो	13
9.	माँ सब जान जाती है	14
10.	यह घर बहुत उदास है	15
11.	लाडो की विदाई	16
12.	नया साल-नया अंदाज	17
13.	मेरा श्रवण	18
14.	गहोई-गुणगान	19
15.	होली के रंग-हर उम्र के संग	20-21

तृप्त प्यास

भोर की पहली किरण के साथ,
मैं अपने सुनहरे खेत में
उसके स्वागत के लिए पहुंचती हूं!
आदित्य के यौवन के संग में अपने खेत में
बिखरे सोने को संभालती हूं!!
किंतु यौवन की गर्मी मेरे हलक को सुखा देती हैं!
तब कुम्हार की दी हुई सौगात से,
अपना गला तर कर,
प्रकृति प्रदत्त प्यास को बुझाती हूं!
और फिर से सूरज के संग
अपना स्वर्ण समेटने लगती हूं!
मेरी प्यास तो इस मटके से बुझ जाती है!
पर बाट जोहते आकुल व्याकुल
मेरे माटी के लालों को,
अपने सुनहरे आभूषणों से समय पर सजा दूं,
तभी सही मायने में मेरी प्यास बुझेगी!

मजबूरी

ओह! ये मजदूर
और इनकी मजबूरी!
कितनी बेबस है
इनकी बेबसी और लाचारी!

पर लानत है उन पर,
जो देते है दो जून की रोटी,
और इस तरह इतराकर,
खुश हो कर लेते हैं सेल्फी!

करोना को तो
एक दिन जाना है!
और मजदूरों के भी
दिन फिरना है!

पर किसी और रूप में ही सही,
गरीबी का मजाक बनाकर,
इनको तो
ऐसे ही खुश होना है!

यह जानते हुए भी,
मजदूर के बिना काम न चलना है!
पर हमको
तो नेकी करके जताना है!

गुलजार होते घर

वजह चाहे कुछ भी बने,
सूने मकान भी घर लगने लगे!
एक मुद्दत के बाद अब वो
रोशन और गुलजार होने लगे!
मौन कमरों को भी अब मुस्कुराना आ गया,
बर्तन और रसोई खुद पर इतराने लगे!
बचपन की जर्जर होती खट्टी मीठी यादों के संग,
सब एक साथ खिल खिलाने लगे!
सुस्त पड़े इंडोर गेम भी,
पहले हम की होड़ लगाने लगे!
बाहर जो चहुंओर नाकाबंदी की है,
ठहाके और तकरार के बीच,
उसने ही जुगलबंदी दी है!
"करो ना" ने ही सही,
वतन के लिए जज्बा दिल में जगाया है!
शंखनाद हो या घंटी,
घर से ही सबको एक सूत्र में पिरोया है!
आव्हान करती है रेनु
सबसे एकसाथ,
हमें घर-घर दीप जलाना है!
करोना का अंधकार मिटाना है!

प्रज्वल निशा

आज सब मिलकर
विशेष दीपावली मनाएं,
प्रज्वल-निशा के मिलन के साक्षी बन जाएं!
अखंडता में एकता की मिसाल बनें,
दीपों से प्रज्वलित रोशनी की मशाल बनें!
इस महामारी को जलाकर
आरोग्य का प्रतीक बनायें!,
जगमग भारत मां को हम जगतगुरु बनाएं!
आज के राम-रावण (विश्व-करोना) युद्ध में,
जीत तो राम की ही होनी है!
शत शत नमन है,
आज के राम
और उनकी सेना के हर बंदे को,
जो इस लड़ाई में अभिमानी है!
स्वाभिमानी है!
बलिदानी है!

मैं वही, मेरी सोच नई

नाज करती हूं खुद पर,
कि मैं एक औरत हूं!
और यही मेरी पहचान है,
हमसे तो जमाना है,
तो जमाने में हमारी जान है
किया है खुद को इतना बुलंद,
कभी न कमजोर पाया है!
नई सोच के साथ,
हमेशा मजबूत बनाया है!
कट्टरता और रूढ़ियों का विरोध किया,
तो संस्कृति और परंपरा को भी अपनाया है!
इस तरह हमने अपना "महिला दिवस" मनाया है।
घर परिवार की नींव बनकर,
देश और समाज को फर्ज बताया है!
जब-जब मेरे अस्तित्व और वजूद को सराहा गया,
उसके सर आंखों पर बिठाया है!
वहीं "नो-मीन्स नो" और "मी-टू" न गवारा है!
क्या देश-विदेश में, क्या जमीं-आसमान में,
इसरो-नासा हो, या खेत-खलिहान में,
फहराते हैं अपना परचम, जीते हैं शान में!
निर्भया-नीरजा, सीतारमण-सुषमा
सब पर अभिमान जताया है!
"अभिनंदन" को वंदन कर,
अपना स्वाभिमान बढ़ाया है!
"दहेज लोभियों और भ्रूण हत्या" को
न कहकर नारीशक्ति को बुलंद बनाया है!
हमने तो साल में अनेक बार,
"महिला-दिवस" मनाया है!

तेरा मेरा साथ रहे

तब हम दो अजनबी ही थे,
जब शादी के बंधन में बंधे थे!
एक दूजे से अनजान,
चढ़ते गये प्यार के परवान!
प्यार और नेह से सिंचित,
वात्सल्य की बगिया में दो अनमोल फूल खिले!
विश्वास और प्रेम के प्रतीक,
महकते फूलों के बागवान बने!
कभी प्यार तो कभी तकरार से,
जिंदगी के उतार-चढ़ाव की,
हर परीक्षा पास करते गए!
हर छोटी-बड़ी बातों के,
हमदम और हमराज़ बनते गए!
गर मां बाप ने मुझको जीवन दिया है,
तो तुमने उसको संवारा है!
पत्नी और मां दोनों रिश्तो में,
मेरीगरिमा और मान बढ़ाया है!
ना हमको प्यार जताना आया,
और ना एक दूजे के बिना जीना भाया!
शायद इसेही दांपत्य अमर प्रेम कहते हैं,
जिसे हम दोनों ने दिल से निभाया!
रूठते मनाते हंसते गाते, सुख दुख में,
निकल गई साल दर साल!
और अब जीवन की इस गोधूलि में,
हम दोनों हैं बेहद खुश हाल!
सात जन्मों में विश्वास नहीं,
अकेले जीने की आस नहीं,
मन्नत है रेनू की सिर्फ इतनी सी,
जब तक सांस रहे, तेरा मेरा साथ रहे!
बस सिर्फ तेरा मेरा साथ रहे!

इक घर बनाया

हम सब ने मिलकर इक घर बनाया है!
छोटा ही सही, हसीन आशियाना सजाया है!

बच्चों ने कमरों और दीवारों को आकार दिया है,
तो सबने मिलकर सपनों को साकार किया!
ख्वाब हकीकत बनकर आंगन में उतरे हैं,
दबे थे जो दिल और दिमाग में, वह सजीव होकर उकरे हैं!

मां पिता की बुनियादी धरोहर को
अपनी संवेदनाओं से सजाया है,
जो सोचा उससे ज्यादा पाया है, जो पाया है उसको बेहतर सहेजा है!
हर कोने में होता है, उनकी मौजूदगी और महक का आभास,
ता-उम्र बना रहे यह साथ और विश्वास..!

बरकरार रखी है अपने "गोपाल जी की भव्यता",
पीढ़ियों तक बनी रहे घर की संस्कृति और सभ्यता!
तुलसी जी आंगन से निहारती हैं अपने नाथ को,
तो इंडोर (पौधे) भी मचलते हैं उनके साथ को!

दुआ है, रेनु की ना बनाएं कोई मकान!
बने हर घर मंदिर हो, साथ माता-पिता विराजमान!
ना ही इससे सुंदर कोई जन्नत है और ना है ठिकाना,
छोटा ही सही हसीन आशियाना बनाना!

अपना शुभ संवत्सर हो

ब्रह्ममहूर्त की पावन बेला में,
कुछ नया कर दिखाना है!
प्रज्ज्वलित कर घर-घर दीप,
दृढ़ संकल्प उठाना है!!

वादा करें सब स्वयं से,
न काटेंगे मध्यरात्रि केक,
हमको अरुणोदय के साथ
अपना शुभ संवत्सर मनाना है!!

हिंदू है हम ना भूलेंगे अपनी संस्कृति,
संवत्सर से करते हैं हम मां की स्तुति,
जहां एक ओर शक्ति की भक्ति से,
जप-तप साधना संयम है!

तो वही वचन और मर्यादा का (राम) जनम है!
उषा की पहली किरण के संग रंगोली बनाएंगे,
अपनी परंपरा और सभ्यता की ज्योत जलाकर,
गोधूलि की बेला में आस्था और भक्ति के दीप जलाएंगे!

सबको आभास करा कर हर जुबान, बोलो शुभ संवत्सर,
हिंदुत्व की आन-बान-शान का परचम फहराएंगे,
हम इस तरह अपना नव संवत्सर मनाएंगे!
ना कहेंगे ना सुनेंगे हैप्पी न्यू ईयर!
जब अपने यहां से "नव शुभ संवत्सर"

मां सब जान जाती है

ना जताने से ना समझाने से,
ना कहने से ना सुनाने से,
कैसे मां सब जान लेती है!
बच्चे की दिल की हर बात मां जान लेती है!

कम नंबर से उदास को, प्रथम आने के उल्लास को,
मौका दिए बिना ही मां सब जान जाती है!

बेटी के दिल की तरंगों को,
आसमान छूते बेटे की उमंगों को
कैसे संभालना है मां सब जान लेती है!

उसूलों और जज्बातों के तूफान में फंसा है,
फर्ज औ कर्ज के भंवर में जकड़ा है,
रुख हवा का किधर है मां सब जान लेती है!

अरमानों की उम्मीद को जगाया नहीं हमने,
भविष्य की आस को बंधाया नहीं,
दिल के मचलते हुए मंथन को मां सब जान लेती है!

गोद में सर रखने के सुकून को,
वात्सल्य के स्पर्श और जुनून को
अनकहे हर भाव को मां सब जान लेती हैं!

ममता की इस अदृश्य शक्ति और जज्बे को,
मां और बच्चे के अनमोल रिश्ते को,
ताउम्र रेनु निशब्द महसूस करती है!
क्योंकि मां सब जान लेती है,
दिल की हर बात जान लेती है,..!

यह घर बहुत उदास है

सूना आंगन मौन कमरे सबको एक शिकायत है,
हर कोने हर चीज से आती एक आवाज है।
बच्चों के जाने के बाद यह घर बहुत उदास है!

आंगन को क्रिकेट का मैदान बनाया,
लकड़ी के पटे का ही विकेट बनाना,
सलामत रखे कप गिलास को भी आभास है!
चुप चुप सूखते होठों को, ना दादी का कहानी सुनाना!

लाडो के बिखरे हुए किचन सेट,
अनकहे लफ्जों का एहसास है!
लड़ाई में पापा की धमकी देकर, जीजी का लेना फायदा!
छोटू का नजरें झुका कर माफी का वह मासूम वायदा!

फिर दोनों का नए अंदाज में मुस्कुराना याद है!
ना कोई खास दिन लगे, और ना मने कोई त्यौहार!
बच्चों के आने से होते ये खास और सजते घर संसार!
अब झिलमिलाते कमरों को भी नाज है!

कहते बच्चे अपनी दुनिया में मस्त व्यस्त हैं!
किंतु रेनु का दिल कहे ये गलत है,
क्योंकि नियति से सब परास्त हैं!
फिर मिलने की खुशी में छोटी है जुदाई!
यही हम सबका विश्वास है!
यह घर बहुत उदास है!!

लाडो की विदाई

आज
मेरी लाडो ससुराल चली है
खुशी और गम से आंख भरी है!
खट्टी मीठी यादों को,
बचपन की बातों को,
किताबों और गुड़ियों को,
अपने आंचल में सहेज रही है!
आज मेरी लाडो...

जिस आंगन में खेली कूदी,
और सजाई रंगोली है!
उस द्वारे से छोटा बचपन,
सजती आज डोली है!

पल है खुशी के, हर्ष के,
मिलन है तो जुदाई भी है!
किंतु इन सब पर भारी,
लाडो तेरी विदाई है!

सदा खुश रहो फूलों फलो
मां की दुआ और खुशी में,
यह अविरल आंसुओं की अगुवाई है!
आज मेरी लाडो.....!!

नया साल-नया अंदाज

नई नवेली सुबह की पहली किरण का,
स्वागत हो सुस्वागत हो!
खुशियों की सौगातों के संग,
नए साल का आगाज हो!
जोश है, उमंग है, सोच है नई-नई,
तो नए साल में बदलाव का,
एक नया अंदाज हो!
मंजिलें हैं अपनी-अपनी,
राह भी है अलग-थलग!
पर सच्चाई के कदमों पर,
सभी का हम साथ हो!
खुशी हो या हो गम, हर पल जियो जिंदादिली से!
जिंदगी ना मिलेगी दोबारा, यही सब का भाव हो!
न सुनाई दे हवस का मौन चीत्कार,
कोख में ही बड़े, लाडो का आकार!
"न" में "न" का और "मी-टू" पर, पुरजोर प्रहार हो!
नींव है जो हमारे जीवन की मां-पिता,
नेह-प्रेम, जज्बात और संस्कृति की,
अपने ही घर पर उनका, ता-उम्र राज हो!
गम का अकेले में पान का,
खुशी में साथ छलकते जाम का!
बदलाव की बयार में नए साल का,
सबका शानदार शुभारंभ हो!
'रेनु' की दुआओं के साथ,
सभी को नया साल मुबारक हो!

मेरा श्रवण

आज मेरा बेटा बड़ा हो गया!
ना जान सके कब पैरों पर खड़ा हो गया!

झलकती है उसकी आंखों से,
वह नशीली मासूमियत!
कम बोल कर भी,
बहुत कुछ कहने की अहमियत!

वह बचपन का सीधा साधा बबुआ
धीर गंभीर आदि हो गया!!
"मैं हूं न!" से लेकर "सब अच्छा ही होगा"!
हरपल यह एहसास करा कर,
सचमुच वह काफी धीर हो गया!

भाई के भाव में अपनी जीजी का
परम वीर हो गया!
कंधे से कंधा मिलाकर चलने को,
पापा का लाडला सयाना हो गया!
जादू की झप्पी से मा-पा पर है भारी!

उसूलों और जज्बातों में मां का
अमीरजादा हो गया!
पहनाई है मां ने दुआ की ऐसी ताबीज,
ता-उम्र अला-बला से फासला हो गया!

फक्र होता है 'रेनु' को तब खुद पर
जब सब कहते हैं,
तेरा बेटा 'श्रवण कुमार' हो गया!
हां! वो मेरा 'श्रवण कुमार' हो गया!

गहोई-गुणगान

गहोइयों का जग में गुणगान हो रहा है!
महासभा से सबका शुभ काम हो रहा है!गहोइयों का.....

छोटा बड़ा न कोई, सब एक में अनेक हैं!
स्वाभिमान से ही जीना, विचार सबके नेक हैं!
मंच पर से ही वृद्धों का सम्मान हो रहा है।
गहोइयों का....

संगठन में शक्ति, यह काम हैं हमारे!
गहोई बंधु इसके लिए ही जाने जाते!
सत्कर्म की ही खातिर, सम्मान हो रहा है।
गहोइयों का....

नारी शक्तियों ने कई काम भी किए हैं!
अब बेटी बचाना हमको, यह वादे भी दिए हैं!!
बेटियों पर सब को नाज हो रहा है।
गहोइयों का.....!

होली के रंग-हर उम्र के संग

बचपन के सपनों की
अपनी रंग बिरंगी होली है!
क्या लड़का क्या लड़की,
यह तो हुड़ दंगों की टोली है!

रंग और पिचकारी की
हफ्ता भर पहले से डिमांड है!
किसको कैसे रंगना है
एक का ही कमांड है!

गुब्बारे का पीठ पर छपाक से,
टंकी में डुबोकर उछाल के,
गुजिया को एक हाथ और एक मुंह में दबा के,
एक दूसरे के चेहरे की खिल्ली उड़ा के,
चिल्ला के कहना "बुरा ना मानो होली है"!

छुटपन की ऐसी ही निराली होली है!!

जवानी की होली की बिंदास कहानी है,
थोड़ा फसाना है तो ज्यादा दीवानगी है!
प्यार है, इजहार है, जोश-मदहोश का
यह रंगीला त्यौहार है!

जीजा-साली, देवर-भाभी की,
खता में भी रजा है!

दोस्तों के साथ जाम का,
ठंडाई में भांग का,
मुंह बोली भौजाई को,
रंगने का अपना ही मजा है!

गिले-शिकवे भूलने-भुलाने का
ये होली का दस्तूर है!
आज ना छोड़ेंगे,
ये जवानी का जुनून है!

जिंदगी की गोधूलि की बेला में,
होली के रंगों में ठहराव है!

सांवरिया से प्रीत हो,
प्रीत की रीत हो,
फागुनी गीत हों, साथ में मीत हो,
अब यही होली की बहार है!

बिन भांग और चीनी की ठंडाई,
फूलों से होली का अब यही त्यौहार है!
चुनर वाली और रघुवीरा की याद में ठहाके लगाना,
पचपन की उम्र का यही होली से लगाव है!!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

रेनु दीपक खर्द

११८, बिहारीजी रोड, तिगेलिया
दतिया (म.प्र.) ४७५६६१
Email- renukhard@gmail.com
Mobile - 9407243107, 6263976308

आज देश विषम संकट के दौर से गुजर रहा है। इस विश्वव्यापी महामारी में, पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया है। हमने अपने अब तक के जीवन में ऐसा लॉकडाउन और बंद नहीं देखा है, जिसने सभी को घर के अंदर कैद कर दिया है! इस परिवर्तित प्राकृतिक आपदा को सीमा-रेखा में रहकर सहर्ष स्वीकारा है। जो घरों से दूर भागते थे या समय नहीं दे पाते थे, वही आज परिवार में रहकर सहयोग और सकारात्मक सोच को बढ़ावा दे रहे हैं।

वहीं दूसरी और अपना जीवन दांव पर लगाकर जो हमें हर तरह की सुविधा और सेवा कर रहे हैं, हमें उनका कृतज्ञ होना चाहिए। आपातकाल में हम हम विशेष वर्ग समूह का भी फर्ज बनता है कि सृजन और साहित्य के माध्यम से उनका हौसला अफजाई और संबल प्रदान करें!! देश के इन कर्णधारों को मेरा शत शत नमन। अंतरा शब्द शक्ति के इस विशेष नए प्रयास में मेरा कुछ भी अनुदान होगा तो खुद को धन्य मानूंगी।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-161-9

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/